The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 5 | December 2023
ISSN: 2583-973X
Website: www.theacademic.in

माध्यमिक शिक्षा के सुधार में शिक्षकों की भूमिका

धर्म बीर सिंह
शोध छात्र, शिक्षा संकाय, सोबन सिंह जीना परिसर
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोंड़ा, उत्तराखण्ड।

प्रो0 भीमा मनराल
विभागाध्यक्षा एवं संकायाध्यक्षा
शिक्षा संकाय, सोबन सिंह जीना परिसर
सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय अल्मोंड़ा, उत्तराखण्ड।

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords :

माध्यमिक शिक्षा, शिक्षक, शिक्षा सुधार, शिक्षण प्रक्रिया, गुणवत्ता शिक्षा, विद्यालय विकास, समावेशी शिक्षा

ABSTRACT

माध्यमिक शिक्षा किसी भी राष्ट्र की शैक्षिक संरचना का अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है। यह विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक, नैतिक एवं व्यावसायिक विकास को दिशा प्रदान करती है। वर्तमान वैश्वीकरण एवं तकनीकी युग में शिक्षा के क्षेत्र में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप माध्यमिक शिक्षा में व्यापक सुधार की आवश्यकता अनुभव की जा रही है। इस सुधार प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका केंद्रीय एवं निर्णायक मानी जाती है। शिक्षक केवल ज्ञान के संप्रेषक नहीं होते, बल्कि वे मार्गदर्शक, प्रेरक, संस्कारदाता तथा सामाजिक परिवर्तन के संवाहक भी होते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक शिक्षा के सुधार में शिक्षकों की भूमिका का विस्तृत एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें माध्यमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति, प्रमुख समस्याएँ, शिक्षकों की जिम्मेदारियाँ तथा शिक्षा सुधार में उनके योगदान का सम्यक् विवेचन किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि योग्य, प्रशिक्षित, संवेदनशील एवं नवाचारी शिक्षक माध्यमिक शिक्षा को अधिक प्रभावी, गुणवत्तापूर्ण तथा विद्यार्थी–केंद्रित बनाने में किस प्रकार सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति उसके नागरिकों की शिक्षा, जागरूकता एवं नैतिक मूल्यों पर निर्भर करती है। माध्यमिक शिक्षा शिक्षा व्यवस्था का वह महत्वपूर्ण स्तर है जो प्राथमिक एवं उच्च शिक्षा के मध्य सेतु का कार्य करता है। यह स्तर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, बौद्धिक विकास, कौशल संवर्धन तथा जीवन–दृष्टि के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारत में माध्यमिक शिक्षा को अधिक प्रभावशाली, व्यावहारिक एवं रोजगारोन्मुख बनाने के उद्देश्य से समय–समय पर विभिन्न शिक्षा आयोगों एवं नीतियों द्वारा अनेक सुधारात्मक प्रयास किए गए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी माध्यमिक शिक्षा में नवाचार, कौशल विकास, तकनीकी दक्षता तथा समावेशी शिक्षा को विशेष महत्व प्रदान किया है। इन सभी सुधारों को व्यवहारिक रूप देने में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। शिक्षक शिक्षा प्रक्रिया का केंद्र बिंदु होता है, जो विद्यार्थियों के ज्ञान, व्यवहार, दृष्टिकोण एवं नैतिक मूल्यों को आकार प्रदान करता है। यदि शिक्षक योग्य, प्रशिक्षित, अनुशासित एवं प्रेरित हों, तो शिक्षा व्यवस्था में सकारात्मक एवं स्थायी परिवर्तन संभव है। अतः माध्यमिक शिक्षा के सुधार में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक एवं आवश्यक है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

वर्तमान समय में माध्यमिक शिक्षा अनेक चुनौतियों एवं समस्याओं का सामना कर रही है। शिक्षा की गुणवत्ता में गिरावट, परीक्षा–केंद्रित शिक्षण, नैतिक मूल्यों का ह्रास, तकनीकी संसाधनों की कमी तथा विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता जैसी समस्याएँ विद्यालयी शिक्षा को प्रभावित कर रही हैं। अनेक विद्यालयों में योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव भी शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करता है। डिजिटल युग में भी कई विद्यालय आधुनिक तकनीकी संसाधनों से वंचित हैं, जिसके कारण शिक्षण प्रक्रिया प्रभावी नहीं बन पाती है।

इन परिस्थितियों में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि शिक्षक आधुनिक शिक्षण विधियों, तकनीकी उपकरणों तथा विद्यार्थी–केंद्रित शिक्षण पद्धतियों को अपनाएँ, तो माध्यमिक शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण बनाया जा सकता है। इसी दृष्टि से प्रस्तुत विषय पर अध्ययन करना आवश्यक एवं प्रासंगिक है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना तथा उसके सुधार में शिक्षकों की भूमिका का अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत माध्यमिक शिक्षा की प्रमुख समस्याओं की पहचान करते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि शिक्षक शिक्षा सुधार में किस प्रकार महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। साथ ही शिक्षकों द्वारा अपनाई जाने वाली सुधारात्मक रणनीतियों का विश्लेषण कर माध्यमिक शिक्षा को अधिक प्रभावशाली एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने हेतु सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं।

4. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए द्वितीयक स्रोतों से सामग्री संकलित की गई है। विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी प्रतिवेदनों, शिक्षा आयोगों तथा इंटरनेट स्रोतों से प्राप्त तथ्यों एवं विचारों का विश्लेषण कर विषय का व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक शिक्षा सुधार में शिक्षकों की भूमिका को वैज्ञानिक एवं तार्किक आधार पर स्पष्ट करना है।

5. माध्यमिक शिक्षा का अर्थ एवं महत्व

माध्यमिक शिक्षा वह स्तर है जो सामान्यतः कक्षा 9 से 12 तक प्रदान किया जाता है। यह शिक्षा विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, व्यावसायिक प्रशिक्षण एवं रोजगार के लिए तैयार करती है। माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक चेतना, नैतिक विकास एवं बौद्धिक परिपक्वता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता, नेतृत्व क्षमता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास होता है।

माध्यमिक शिक्षा केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह विद्यार्थियों को समाज के उत्तरदायी नागरिक के रूप में विकसित करने का कार्य भी करती है। राष्ट्र के आर्थिक एवं सामाजिक विकास में भी माध्यमिक शिक्षा का विशेष योगदान होता है, क्योंकि यह कुशल एवं सक्षम मानव संसाधन तैयार करती है।

6. माध्यमिक शिक्षा की वर्तमान समस्याएँ

6.1 शिक्षा की गुणवत्ता में कमी

अनेक विद्यालयों में शिक्षण प्रक्रिया प्रभावी एवं विद्यार्थी–केंद्रित नहीं है। शिक्षा केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने तक सीमित हो गई है, जिससे विद्यार्थियों की तार्किक क्षमता, रचनात्मक सोच तथा व्यावहारिक ज्ञान का समुचित विकास नहीं हो पाता है।

6.2 प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी

कई विद्यालयों में योग्य एवं प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव देखने को मिलता है। पर्याप्त प्रशिक्षण एवं विषय विशेषज्ञता के बिना शिक्षण कार्य प्रभावी नहीं बन पाता, जिसके कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शिक्षा की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

6.3 तकनीकी संसाधनों की कमी

डिजिटल शिक्षा के इस आधुनिक युग में भी अनेक विद्यालयों में कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्ट बोर्ड एवं डिजिटल कक्षाओं जैसी सुविधाओं का अभाव है। तकनीकी संसाधनों की कमी के कारण शिक्षण प्रक्रिया आधुनिक एवं प्रभावी नहीं बन पाती है।

6.4 नैतिक शिक्षा का अभाव

वर्तमान समय में विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, अनुशासन एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना धीरे–धीरे कम होती जा रही है। नैतिक शिक्षा के अभाव के कारण विद्यार्थियों के व्यवहार एवं चरित्र निर्माण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

6.5 परीक्षा केंद्रित शिक्षा

विद्यालयों में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना बन गया है। रटने की प्रवृत्ति बढ़ने से विद्यार्थियों की रचनात्मकता, चिंतन शक्ति एवं समस्या समाधान क्षमता का समुचित विकास नहीं हो पाता है।

6.6 अनुशासन संबंधी समस्याएँ

विद्यालयों में अनुशासनहीनता, तनाव, असहिष्णुता एवं आपसी संघर्ष जैसी समस्याएँ निरंतर बढ़ती जा रही हैं। इन समस्याओं के कारण विद्यार्थियों का शैक्षिक वातावरण प्रभावित होता है तथा उनके मानसिक एवं सामाजिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

7. माध्यमिक शिक्षा के सुधार में शिक्षकों की भूमिका

7.1 आदर्श मार्गदर्शक के रूप में

शिक्षक विद्यार्थियों के जीवन में आदर्श व्यक्तित्व के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनका व्यवहार, आचरण, व्यक्तित्व एवं कार्यशैली विद्यार्थियों को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। शिक्षक यदि ईमानदारी, अनुशासन, समयपालन तथा नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं, तो विद्यार्थी भी उन्हीं गुणों को अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं। एक आदर्श शिक्षक विद्यार्थियों को केवल शैक्षिक ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि उन्हें जीवन के नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों से भी परिचित कराता है। इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

7.2 गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रदान करना

माध्यमिक शिक्षा को प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक नवीन शिक्षण विधियों, गतिविधि आधारित अधिगम तथा तकनीकी संसाधनों का उपयोग करके शिक्षण प्रक्रिया को अधिक रोचक एवं उपयोगी बना सकते हैं। स्मार्ट क्लास, प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण, समूह चर्चा तथा प्रयोगात्मक शिक्षण जैसी विधियाँ विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता को बढ़ाती हैं। इन विधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में विषय के प्रति रुचि उत्पन्न होती है तथा उनकी समझने और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित होती है। इससे सीखने की प्रक्रिया सरल, प्रभावी एवं स्थायी बनती है।

7.3 विद्यार्थी केंद्रित शिक्षा को बढ़ावा देना

आधुनिक शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण को विशेष महत्व दिया जाता है। इस पद्धति में शिक्षक विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता, आवश्यकता एवं सीखने की गति को ध्यान में रखकर शिक्षण कार्य करते हैं। जब शिक्षक विद्यार्थियों को अपनी बात रखने, प्रश्न पूछने तथा गतिविधियों में भाग लेने का अवसर प्रदान करते हैं, तो उनमें आत्मविश्वास एवं स्वाध्याय की प्रवृत्ति विकसित होती है। विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण रचनात्मकता, तार्किक चिंतन तथा समस्या समाधान क्षमता को भी बढ़ावा देता है। इस प्रकार यह पद्धति विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

7.4 नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास

विद्यालय विद्यार्थियों के नैतिक एवं सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण केंद्र होता है, और इसमें शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक विद्यार्थियों में ईमानदारी, अनुशासन, सहयोग, सहिष्णुता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित कर सकते हैं। प्रार्थना सभा, सामाजिक सेवा कार्यक्रम, पर्यावरण जागरूकता अभियान तथा नैतिक शिक्षा संबंधी गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में अच्छे संस्कारों का विकास किया जा सकता है। शिक्षक अपने व्यवहार एवं कार्यों द्वारा विद्यार्थियों को नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। इससे विद्यार्थियों में सामाजिक समरसता एवं मानवीय मूल्यों का विकास होता है।

7.5 तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना

वर्तमान डिजिटल युग में शिक्षक की भूमिका केवल पुस्तक आधारित ज्ञान तक सीमित नहीं रह गई है। शिक्षक विद्यार्थियों को कंप्यूटर, इंटरनेट, ऑनलाइन शिक्षा एवं डिजिटल संसाधनों का उपयोग सिखाकर उन्हें आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार कर सकते हैं। स्मार्ट बोर्ड, ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन क्विज, डिजिटल प्रेजेंटेशन तथा शैक्षिक वीडियो जैसे तकनीकी साधन शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी एवं रोचक बनाते हैं। तकनीकी शिक्षा विद्यार्थियों में डिजिटल दक्षता विकसित करती है तथा उन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करती है। इससे शिक्षा अधिक सुलभ, व्यावहारिक एवं आधुनिक बनती है।

7.6 समावेशी शिक्षा को प्रोत्साहन

समावेशी शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को समान अवसर प्रदान करना है, चाहे उसकी सामाजिक, आर्थिक या शारीरिक स्थिति कैसी भी हो। शिक्षक को सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए तथा विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को भी उचित सहयोग एवं प्रोत्साहन प्रदान करना चाहिए। समावेशी शिक्षा से विद्यार्थियों में समानता, सहयोग एवं सामाजिक समरसता की भावना विकसित होती है। इससे शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित होता है तथा समाज में भेदभाव की भावना कम होती है। शिक्षक सकारात्मक वातावरण निर्मित करके सभी विद्यार्थियों को आत्मविश्वास के साथ सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

7.7 अनुशासन एवं व्यक्तित्व विकास

विद्यालय में अनुशासन बनाए रखने तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक विद्यार्थियों को समय प्रबंधन, जिम्मेदारी, नेतृत्व क्षमता एवं आत्मनियंत्रण का प्रशिक्षण देते हैं। वाद–विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, खेलकूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन से विद्यार्थियों की प्रतिभा का विकास होता है। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहयोग की भावना तथा नेतृत्व क्षमता विकसित होती है। शिक्षक विद्यार्थियों को सकारात्मक सोच एवं अनुशासित जीवन जीने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे उनका सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है।

7.8 करियर मार्गदर्शन प्रदान करना

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी अपने भविष्य एवं करियर को लेकर अक्सर भ्रमित रहते हैं। ऐसे समय में शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को विज्ञान, कला एवं वाणिज्य जैसे विभिन्न विषयों की जानकारी देकर उनकी रुचि एवं क्षमता के अनुसार उचित दिशा प्रदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त प्रतियोगी परीक्षाओं, रोजगार के अवसरों तथा कौशल विकास संबंधी जानकारी देकर विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार किया जा सकता है। उचित करियर मार्गदर्शन विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाता है तथा उन्हें अपने लक्ष्य निर्धारित करने में सहायता प्रदान करता है।

7.9 नवाचार एवं शोध को प्रोत्साहन

शिक्षक विद्यार्थियों में जिज्ञासा, रचनात्मकता एवं शोध प्रवृत्ति विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परियोजना कार्य, विज्ञान प्रदर्शनी, प्रयोगात्मक गतिविधियाँ तथा शोध आधारित अधिगम विद्यार्थियों को नई चीजों को समझने एवं खोजने के लिए प्रेरित करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, तर्क करने तथा समस्याओं के समाधान खोजने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इससे विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास होता है। नवाचार एवं शोध आधारित शिक्षण विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर एवं रचनात्मक बनाने में सहायक सिद्ध होता है।

7.10 अभिभावकों के साथ समन्वय

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में विद्यालय एवं परिवार दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक यदि अभिभावकों के साथ नियमित संपर्क बनाए रखें, तो विद्यार्थियों की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझा एवं समाधान किया जा सकता है। अभिभावक–शिक्षक बैठकें विद्यार्थियों की प्रगति, व्यवहार एवं अध्ययन संबंधी समस्याओं पर चर्चा करने का प्रभावी माध्यम होती हैं। शिक्षक एवं अभिभावकों के सहयोग से विद्यार्थियों के लिए सकारात्मक एवं प्रेरणादायक वातावरण तैयार किया जा सकता है। इस प्रकार विद्यालय एवं परिवार के समन्वय से विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं नैतिक विकास को सुदृढ़ बनाया जा सकता है।

8. शिक्षक प्रशिक्षण का महत्व

माध्यमिक शिक्षा के सुधार में शिक्षक प्रशिक्षण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रशिक्षित शिक्षक आधुनिक शिक्षण तकनीकों, नवीन शिक्षा नीतियों एवं तकनीकी संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर सकते हैं। डिजिटल शिक्षा, समावेशी शिक्षा, मूल्य आधारित शिक्षा तथा जीवन कौशल शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षकों को नियमित प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षक अपने ज्ञान एवं कौशल को अद्यतन करते हैं, जिससे शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावी, रचनात्मक एवं विद्यार्थी–केंद्रित बनती है।

9. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और शिक्षक की भूमिका

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने माध्यमिक शिक्षा में व्यापक सुधारों की परिकल्पना प्रस्तुत की है। इस नीति में शिक्षक को शिक्षा परिवर्तन का प्रमुख आधार माना गया है। नीति के अनुसार शिक्षा को कौशल आधारित, बहुविषयक, अनुभवात्मक एवं रचनात्मक बनाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन, समस्या समाधान क्षमता एवं नवाचार को विकसित करने पर विशेष बल दिया गया है। इन उद्देश्यों की प्राप्ति में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि शिक्षक नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करें, तो माध्यमिक शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन संभव है।

10. माध्यमिक शिक्षा सुधार में आने वाली चुनौतियाँ

10.1 संसाधनों की कमी

ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों के अनेक विद्यालयों में भवन, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कंप्यूटर तथा इंटरनेट जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव होता है। संसाधनों की कमी के कारण शिक्षण प्रक्रिया प्रभावी नहीं बन पाती तथा विद्यार्थियों का समुचित विकास प्रभावित होता है।

10.2 शिक्षकों पर अतिरिक्त कार्यभार

शिक्षकों को शिक्षण कार्य के अतिरिक्त जनगणना, चुनाव ड्यूटी, प्रशासनिक कार्य तथा विभिन्न सरकारी योजनाओं से जुड़े दायित्व निभाने पड़ते हैं। इससे वे विद्यार्थियों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे पाते और शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

10.3 तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव

वर्तमान डिजिटल युग में भी अनेक शिक्षक तकनीकी संसाधनों एवं ऑनलाइन शिक्षण विधियों के उपयोग में पूर्णतः प्रशिक्षित नहीं हैं। तकनीकी दक्षता की कमी के कारण वे आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का प्रभावी उपयोग नहीं कर पाते हैं।

10.4 विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताएँ

प्रत्येक विद्यार्थी की सीखने की क्षमता, रुचि एवं समझने का स्तर अलग–अलग होता है। ऐसी स्थिति में सभी विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षण करना शिक्षकों के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य बन जाता है।

11. सुधार हेतु सुझाव

माध्यमिक शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए शिक्षकों को नियमित एवं उन्नत प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए। विद्यालयों में आधुनिक तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहन मिल सके। शिक्षक–विद्यार्थी अनुपात संतुलित होना चाहिए, जिससे प्रत्येक विद्यार्थी को उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो सके।

मूल्य आधारित शिक्षा को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का विकास किया जाना चाहिए। परीक्षा प्रणाली में सुधार कर रचनात्मक एवं व्यावहारिक ज्ञान को महत्व दिया जाना आवश्यक है। शिक्षकों को नवाचार एवं शोध कार्यों के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए तथा विद्यालयों में करियर परामर्श एवं मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन की प्रभावी व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए। अभिभावकों एवं समुदाय की सक्रिय सहभागिता भी शिक्षा सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

12. निष्कर्ष

माध्यमिक शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है तथा उसके सुधार में शिक्षक की भूमिका केंद्रीय एवं अनिवार्य है। शिक्षक केवल ज्ञान प्रदान करने वाले व्यक्ति नहीं, बल्कि समाज निर्माता, संस्कारदाता एवं राष्ट्र निर्माण के प्रमुख आधार स्तंभ हैं। यदि शिक्षक योग्य, प्रशिक्षित, संवेदनशील एवं नवाचारी हों, तो माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में व्यापक सुधार संभव है।

वर्तमान समय की आवश्यकता है कि शिक्षकों को आधुनिक तकनीक, नवीन शिक्षण विधियों तथा मूल्य आधारित शिक्षा से सशक्त बनाया जाए। शिक्षा सुधार तभी सफल हो सकता है जब शिक्षक अपने दायित्वों का निर्वहन समर्पण, अनुशासन, नवाचार एवं मानवीय संवेदनाओं के साथ करें। अतः माध्यमिक शिक्षा के सुधार में शिक्षकों की भूमिका को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान किया जाना अत्यंत आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, आर0ए0 (2013). शिक्षा तकनीकी के मूल तत्व निर्देशन एवं प्रबन्धन आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।
2. पाठक, पी0डी0 (2006). भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा–2।
3. भटनागर सुरेश, (2014). आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।
4. मिश्रा, एम0के0, (2006). शैक्षिक एवं उदीयमान भारतीय समाज, यूनिवर्सिटी बुक हाउस (प्रा0) लि0 जयपुर–3।
5. लाल, एवं शर्मा (2013–2014). भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।

6. सक्सेना, एन0आर0 एवं चतुर्वेदी, शिखा (2010). उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।
7. सिंह, डी0बी0 एवं चतुर्वेदी ए0के0 (2020). गाँधी दर्शन और शिक्षा, निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स आगरा।
8. NCERT की रिपोर्टें
9. UGC प्रकाशन
10. माध्यमिक शिक्षा आयोग रिपोर्ट
11. शिक्षा मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्टें
12. विभिन्न शोध पत्रिकाएँ एवं इंटरनेट स्रोत।